हालीवुड का नया मसीही उपदेश

'प्रकृति से छेड़छाड़ मत करो!'

दृष्टि

मानव सभ्यता की शुरुआत से लेकर आज तक मनुष्य विज्ञान की मदद से उन्नति करता रहा है। विज्ञान के हथियार से लैस होकर मनुष्य ने अपने को बंधनमुक्त कर अपनी अज्ञानता को दूर किया। और आज भी वह विज्ञान की मशाल को अपने हाथ में लेकर अज्ञात भय की सुरंगों के गहन अंधकार को चीरते हुए भविष्य के पथ पर आगे बढ़ रहा है। लेकिन विगत कुछ वर्षों से हालीवुड के फिल्म निर्माताओं द्वारा बनायी जा रही फिल्मों में विज्ञान के सृजनकारी रूप की जगह उसके विध्वंसकारी रूप को चित्रित किया जा रहा है, मनुष्य के हाथ में विज्ञान के हथियार को पथ प्रदर्शक की बजाय आत्मघातक हथियार के रूप में दिखाया जा रहा है।

विभिन्न विलुप्त हो चुके या अस्तित्वमान जीव-जन्तुओं पर वैज्ञानिक प्रयोगों के घातक परिणामों के माध्यम से विज्ञान के विनाशक रूप को प्रस्तुत किया जा रहा है। 'डीप ब्लू सी' (मौत का समुद्र) में पार्किन्सन रोग के इलाज के लिए शार्क के मस्तिष्क से थोड़ा प्रोटीन निकालने पर उसका बदहवास होकर प्रयोगकर्ताओं के लिए ही काल बन जाना, 'अनाकोण्डा' और 'किंग कोब्रा' में सांपों से छेड़छाड़ कर देने पर उनका खतरनाक रूप में सामने आना, 'जुरासिक पार्क' और 'द लास्ट वर्ल्ड' में प्रयोगों के बाद डायनासोर का उदय होकर विध्वंस मचाना, 'बैट्स' में वैज्ञानिक प्रयोगों के कारण खतरनाक हो गये चमगादड़ों का मनुष्यों पर धावा बोल देना, 'गॉडजिला' में नाभिकीय विकिरण के कारण छिपकली प्रजाति के एक जीव का दैत्याकार रूप धरकर न्यूयार्क में कहर बरपा करना इसके कुछ उदाहरण हैं।

इन सभी फिल्मों में विज्ञान के साथ कल्पना के घालमेल से दिखाया जाता है कि प्रकृति के नियमों के साथ छेड़छाड़ से कैसे विनाशकारी दैत्य पैदा हो जाते हैं। इनका संदेश कुछ वैसे ही होता है जैसे एक ओर तो पूंजीवादी होड़ के परिणामस्वरूप भयंकर संहारक्षमता वाले परमाणु हथियार रचे जाते हैं और फिर उन्हीं का उदाहरण देकर विज्ञान को ही दोषी ठहराया जाता है। विज्ञान का गलत इस्तेमाल कौन और किसलिये कर रहा है, इस पर पर्दा डाल दिया जाता है। यह अनायास नहीं है कि — 'जुरासिक पार्क', 'द लास्ट वर्ल्ड', 'गॉडजिला', 'अनाकोण्डा', 'किंग कोब्रा, 'डीप ब्लू सी', 'मगरमच्छ', 'बैट्स'—इन सभी फिल्मों में विज्ञान की नकारात्मक भूमिका है, सकारात्मक नहीं। इन सभी फिल्मों में वैज्ञानिक प्रयोग निष्कर्ष रूप में एक ही सन्देश दे रहे हैं—'प्रकृति से छेड़छाड़ मत करो'। लेकिन सह सन्देश भी आरोपित है, क्योंकि प्रकृति से छेड़छाड़ करने वाले पूंजीपति, व्यापारी, माफिया आदि ही तो हैं—बाजार तथा पूंजी के स्वामी! फिर यह चीख-पुकार क्यों? आखिर आज विज्ञान उन्हींके हाथ में मुनाफा कमाने का एक औजार बन गया है।

भूमण्डलीकरण के दौर में विश्व पूंजीवाद आज संकटग्रस्त है, उसका भविष्य अंधकारमय है। वह अपने अन्त को समूची मानवता का भविष्य बनाकर प्रस्तुत करते हुए तरह-तरह के 'अन्त' के दर्शन दे रहा है। 'विज्ञान का अन्त' हो जाने की बातें की जा रही हैं। इसलिए विज्ञान की अवैज्ञानिक प्रस्तुति हो रही है। विज्ञान का निषेध, जिज्ञासाओं का निषेध और अन्त में जीवन का ही निषेध कर यह स्थापित किया जा रहा है कि वर्तमान पतनशील, परजीवी पूंजीवादी व्यवस्था ही मानव सभ्यता का चरम रूप है, मानव सभ्यता अब इसके आगे डग नहीं भर सकती।

सवाल यह है कि इन फिल्मों को दर्शक क्यों पसन्द कर रहे हैं? इसका कारण विज्ञान की अवैज्ञानिक धारणाओं में उतना नहीं है जितना समाज में व्याप्त निराशा, विकल्पहीनता, पूंजी की अंध शक्तियों के सम्मुख निरुपायता और पूंजी एवं बाजार की शक्तियों के रहस्यीकरण में है। आज भी बहुसंख्यक मेहनतकश लोगों के लिए यह बात सच है कि कर्म वह करते हैं, फल किसी अदृश्य सत्ता के हाथ में है। इसी सोच को और मजबूती से दिमागों में बैठाने के लिए आज हालीवुड में भूत-प्रेत, रहस्य और परा-मनोविज्ञान पर भी खूब फिल्में बनायी जा रही हैं। 'सिक्स्थ सेंस', 'दि ब्लेयर विच प्रोजेक्ट', 'आई नो व्हाट यू डिड लास्ट समर', 'स्क्रीम-I', 'स्क्रीम-II' और 'एविल डेड' जैसी फिल्में इसके चंद उदाहरण हैं।

यह ठीक है कि आज विज्ञान की रचनात्मक भूमिका की जगह इसकी ध्वंसात्मक भूमिका ज्यादा सामने आ रही है, लेकिन यह भी वर्ग-निरपेक्ष नहीं है। विज्ञान आज सत्ताधारी पूंजीपति वर्ग के हितों के मातहत है जो बहुसंख्यक मेहनतकश वर्ग से ज्यादा से ज्यादा मुनाफा निचोड़ने और उसके ऊपर शासन करने के लिए विज्ञान को एक शोषणकारी यंत्र के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। जब तक समाज वर्गों में बंटा है, मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण है तब तक विज्ञान भी शासक वर्गों के हितों के लिए इस्तेमाल होता रहेगा। विज्ञान अपने सृजनकारी रूप में तभी सामने आ पायेगा, जब एक प्रबल जनक्रान्ति होगी और वर्ग अन्तरविरोधों का स्वरूप बदलेगा। समाज विज्ञान के साथ प्रकृति विज्ञान को गतिहीन साबित करने की नाकाम कोशिश करने वाली पूंजीवादी सभ्यता की जीवनीशक्ति आज निश्शेष हो चुका है। इसीलिए वह विज्ञान को बंधक बनाकर खुद को दीर्घजीविता का इंजेक्शन लगाने की कोशिश कर रही है। यदि मानवता को आगे बढ़ना है तो विज्ञान को इन सभी बंधनों से मुक्त करना होगा जिनमें वर्ग-पूर्वाग्रहों और सरकारी दबावों ने उसे बांध रखा है। ●

घोषणापत्र : प्रपत्र-1

पत्रिका का नाम	- आह्वान कैम्पस टाइम्स
आवर्तिता	- त्रैमासिक
भाषा	- हिन्दी
प्रकाशक-स्वामी का स्थान	- गोरखपुर
प्रकाशक का नाम	- आदेश सिंह
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	- 'संस्कृति कुटीर', कल्याणपुर, गोरखपुर
मुद्रक का नाम	- आदेश सिंह
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	- 'संस्कृति कुटीर', कल्याणपुर, गोरखपुर
सम्पादक का नाम	- मुकुल श्रीवास्तव
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	- 'संस्कृति कुटीर', कल्याणपुर, गोरखपुर
मुद्रणालय का नाम	- आफसेट प्रेस, नखास गोरखपुर

मैं आदेश सिंह, यह घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त तथ्य मेरी अधिकतम जानकारी के अनुसार सत्य हैं।

हस्ताक्षर
आदेश सिंह
(प्रकाशक/स्वामी/मुद्रक)